पद्मश्री डॉ॰ रामदयाल मुण्डा एवं साहित्य अकादमी सम्मानित (कुँड़ुख़ भाषा) से सम्मानित डॉ॰ निर्मल मिंज का कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि के विकास में योगदान एवं उनके विचार

वर्ष - 1997

1. Dr. Ramdayal Munda

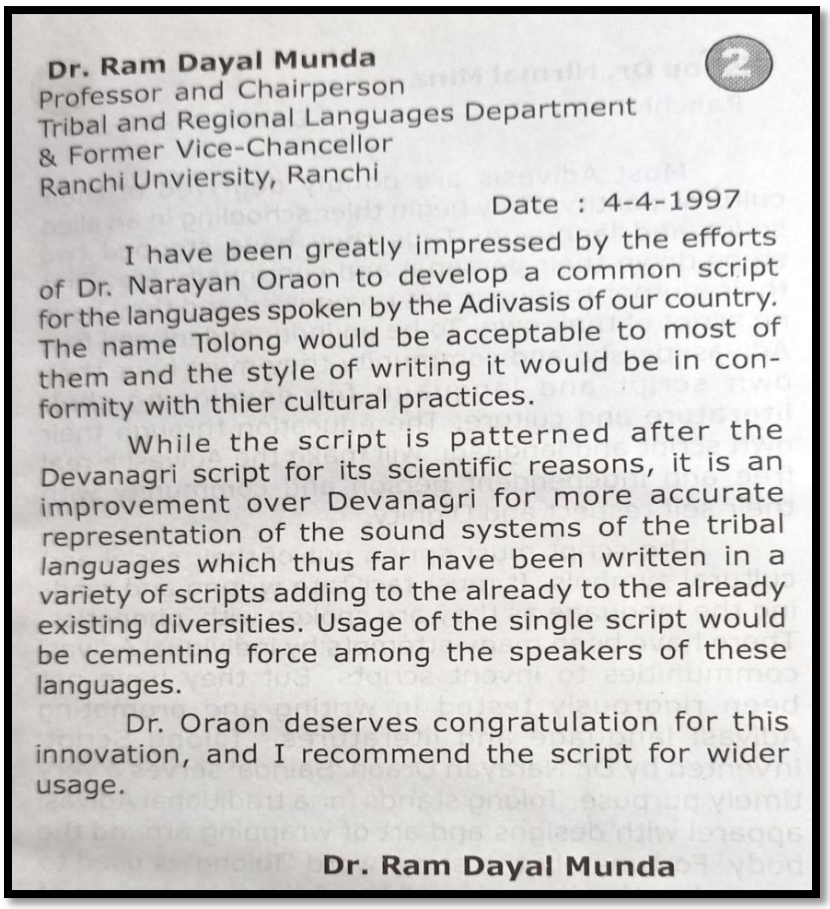

Dr. Ram Dayal Munda
Professor and Chairperson
Tribal and Regional Languages Department
& Former Vice-Chancellor
Ranchi Unviersity, Ranchi

Date : 4-4-1997

I have been greatly impressed by the efforts of Dr. Narayan Oraon to develop a common script for the languages spoken by the Adivasis of our country. The name Tolong would be acceptable to most of them and the style of writing it would be in conformity with thier cultural practices.

While the script is patterned after the Devanagri script for its scientific reasons, it is an improvement over Devanagri for more accurate representation of the sound systems of the tribal languages which thus far have been written in a variety of scripts adding to the already to the already existing diversities. Usage of the single script would be cementing force among the speakers of these languages.

Dr. Oraon deserves congratulation for this innovation, and I recommend the script for wider usage.

Dr. Ram Dayal Munda

(साभार : तोलोंग सिकि का उदभव और विकास, नव झारखण्ड प्रकाशन, 2003 ई॰)

(नीचे, उपरोक्त वक्तव्य/आलेख का हिन्दी अनुवाद)

डॉ. राम दयाल मुंडा
प्रोफेसर और अध्यक्ष
जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग एवं
पूर्व कुलपति, रांची विश्वविद्यालय, रांची।

दिनांक: ०४.०४.१९९७

हमारे देश के आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के लिए एक सामान्य लिपि विकसित करने के डॉ. नारायण उरांव के प्रयासों से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। तोलोंग नाम उनमें से अधिकांश को स्वीकार्य होगा और इसे लिखने की शैली उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं के अनुरूप है।

जबकि लिपि को देवनागरी लिपि के वैज्ञानिक कारणों से प्रतिरूपित किया गया है, यह आदिवासी भाषाओं की ध्वनि प्रणालियों को अधिक सटीक प्रतिनिधित्व के लिए देवनागरी पर एक सुधार है, जो अब तक पहले से ही जोड़ने वाली विभिन्न लिपियों में लिखी गई है। मौजूदा विविधताएं के बीच एकल लिपि का उपयोग इन भाषाओं के बोलने वालों के बीच सामाजिक एकता बल को मजबूत करेगा।

डॉ. उरांव इस नवाचार के लिए बधाई के पात्र हैं, और मैं व्यापक उपयोग के लिए स्क्रिप्ट की अनुशंसा करता हूं।

- डॉ. राम दयाल मुंडा

2. BISHOP Dr. NIRMAL MINJ

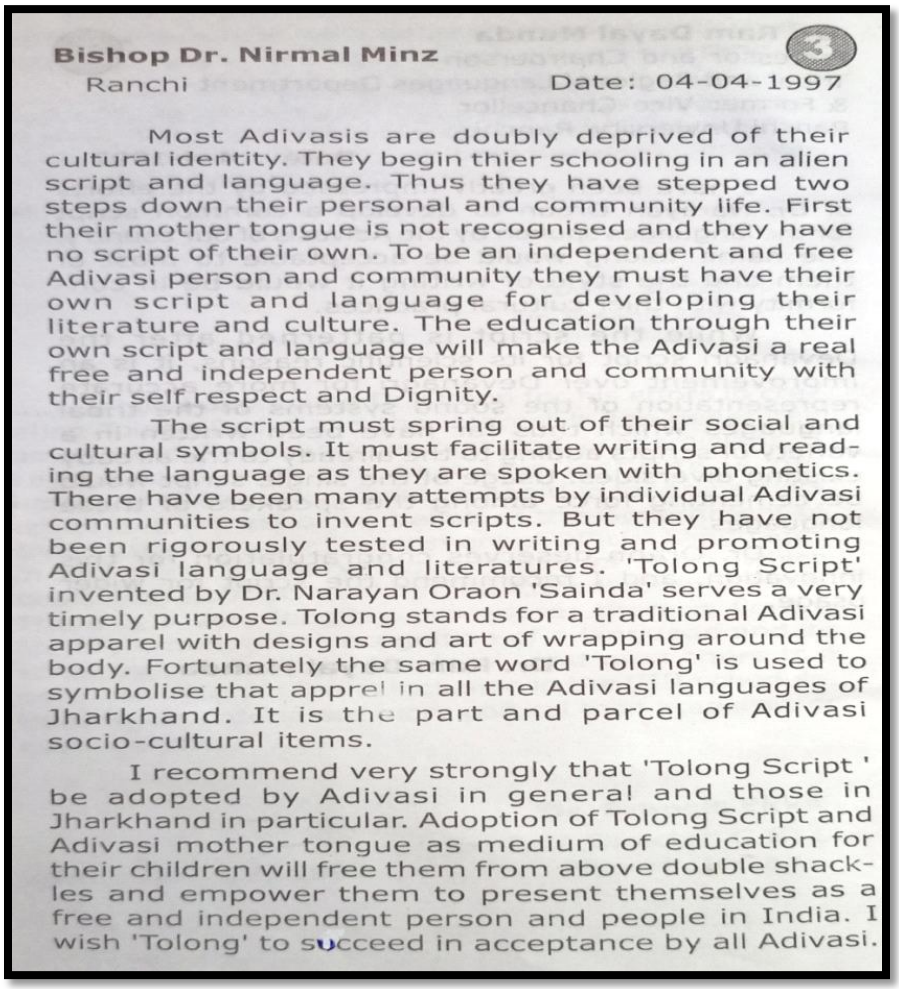

Bishop Dr. Nirmal Minz 3

Ranchi Date: 04-04-1997

Most Adivasis are doubly deprived of their cultural identity. They begin thier schooling in an alien script and language. Thus they have stepped two steps down their personal and community life. First their mother tongue is not recognised and they have no script of their own. To be an independent and free Adivasi person and community they must have their own script and language for developing their literature and culture. The education through their own script and language will make the Adivasi a real free and independent person and community with their self respect and Dignity.

The script must spring out of their social and cultural symbols. It must facilitate writing and reading the language as they are spoken with phonetics. There have been many attempts by individual Adivasi communities to invent scripts. But they have not been rigorously tested in writing and promoting Adivasi language and literatures. 'Tolong Script' invented by Dr. Narayan Oraon 'Sainda' serves a very timely purpose. Tolong stands for a traditional Adivasi apparel with designs and art of wrapping around the body. Fortunately the same word 'Tolong' is used to symbolise that apprel in all the Adivasi languages of Jharkhand. It is the part and parcel of Adivasi socio-cultural items.

I recommend very strongly that 'Tolong Script ' be adopted by Adivasi in general and those in Jharkhand in particular. Adoption of Tolong Script and Adivasi mother tongue as medium of education for their children will free them from above double shackles and empower them to present themselves as a free and independent person and people in India. I wish 'Tolong' to succeed in acceptance by all Adivasi.

(साभार : तोलोंग सिकि का उदभव और विकास, नव झारखण्ड प्रकाशन, 2003 ई॰)

(नीचे, उपरोक्त वक्तव्य/आलेख का हिन्दी अनुवाद)

बिशप डॉ. निर्मल मिंज

रांची दिनांक : 04-04-1997

अधिकांश आदिवासी अपनी सांस्कृतिक पहचान से दो तरह से वंचित हैं। वे अपनी स्कूली शिक्षा एक विदेशी लिपि एवं भाषा में शुरू करते हैं। इस प्रकार उन्होंने अपने व्यक्तिगत और सामुदायिक जीवन से दो सीढ़ी नीचे कदम रखा है। पहले उनकी मातृभाषा की मान्यरता नहीं है और उनकी अपनी कोई लिपि नहीं है। एक स्वतंत्र आदिवासी व्यक्ति और समुदाय होने के लिए उनके पास अपने साहित्य और संस्कृति को विकसित करने के लिए अपनी लिपि और भाषा होनी चाहिए। उनकी अपनी भाषा एवं लिपि के माध्यम से शिक्षा, एक आदिवासी को अपने आत्म सम्मान एवं गरीमा के साथ एक वास्तविक स्वतंत्र व्यक्ति और समुदाय बना देगी।

लिपि को उनके सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतीकों से बाहर निकलना चाहिए। इसे भाषा को लिखने और पढ़ने में सुविधा होनी चाहिए क्योंकि वे ध्वन्यात्मक रूप से बोली जाती हैं। व्यक्तिगत आदिवासी समुदायों द्वारा लिपियों का आविष्कार करने के कई प्रयास किए गए हैं, लेकिन आदिवासी भाषा और साहित्य के लेखन और प्रचार-प्रसार में उनका कड़ाई से परीक्षण नहीं किया गया है। डॉ. नारायण उरांव ‘सैन्दा द्वारा आविष्कार की गई 'तोलोंग लिपि' एक बहुत ही सामयिक उद्देश्य की पूर्ति करती है। तोलोंग एक पारंपरिक आदिवासी परिधान है जिसमें शरीर के चारों ओर डिजाइन और लपेटने की कला है। सौभाग्य से एक ही शब्द 'तोलोंग' झारखंड की सभी आदिवासी भाषाओं में उस परिधान के प्रतीक के लिए प्रयोग किया जाता है। यह आदिवासी सामाजिक-सांस्कृतिक वस्तुओं का अभिन्न अंग है।

मैं बहुत दृढ़ता से अनुशंसा करता हूं कि आम तौर पर आदिवासी और विशेष रूप से झारखंड के लोगों द्वारा 'तोलोंग स्क्रिप्ट' को अपनाया जाए। अपने बच्चों के लिए शिक्षा के माध्यम के रूप में तोलोंग लिपि और आदिवासी मातृभाषा को अपनाने से वे ऊपर की दोहरी बेड़ियों से मुक्त हो जाएंगे और उन्हें खुद को पेश करने के लिए सशक्त बनाएंगे, भारत में एक स्वतंत्र व्यक्ति और लोगों के रूप में। मैं कामना करता हूं कि 'तोलोंग सिकि' सभी आदिवासियों द्वारा स्वीकृति में सफल हो।

मई 1997 में सामाजिक, सांस्कृातिकएवं भाषा विज्ञान आधारित 'तोलोंग सिकि वर्णमाला’ हेतु भाषाविदों का सुझाव एवं समर्थन

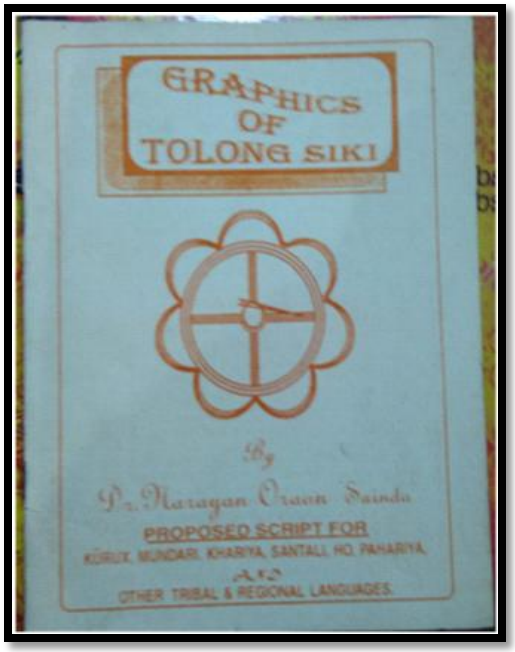

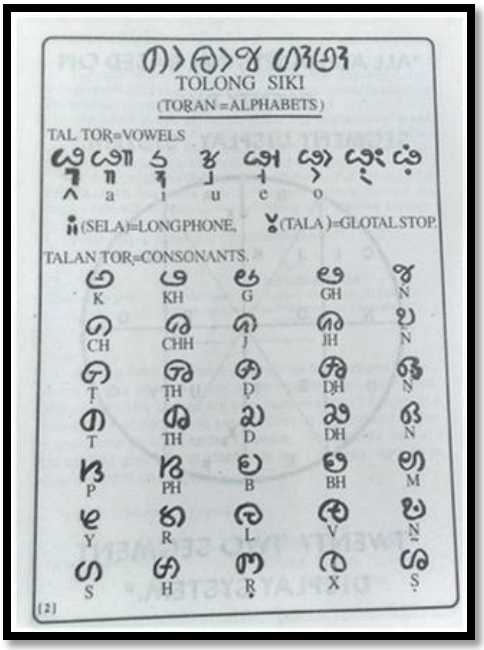

नई लिपि के इस स्वरूप को भाषाविदों ने अस्वीकार किया और भाषा विज्ञान आधारित वर्णमाला पर सहमति बनीं।

डॉ॰ नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि पुस्तक की रचना की गई, जिसे सामाजिक सहयोग से छपवाया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण दिनांक 05.05.1997 को राँची विश्वकविद्यालय़राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में हिन्दी दैनिक , प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक श्री हरिवंश जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह में श्री हरिवंश जी ने कहा - वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में पूरे विश्वम म़ेंभाषाएँ सिमटती जा रही हैं। आकलन है कि विश्व में लगभग 16000 हजार भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो इस सदी के अंत तक मात्र 6000 हजार रह जायेंगी। यह, समस्त मानव जाति के लिए घोर संकट का विषय है। आज का यह समारोह भाषा बचाने के कार्य के रूप में इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा। इस लिपि की प्रस्तुति पर डॉ॰ बी॰ पी॰ केसरी को छोड़कर सभी सहमत हुए। डॉ॰ बी॰ पी॰ केसरी ने कहा - एखन दुनियाँ , चांद में पोंहईंच गेलक, लकिन ई जगे आदिवासी मन कबिला-कबिला कर बात करेक लाइग हँय। अब आदिवासी मनके देश कर मुख्य धारा से जुड़ेक चाही। उसके बाद, मुख्य वक्ता डॉ॰ रामदयाल मुण्डा द्वारा पुस्तक में, हिन्दी वर्णमाला के आधार पर प्रस्तुत किये गये तरीके को अव्यवहारिक मानते हुए फिर से सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली तथा भाषा वैज्ञानिक तथ्यों वाली लिपि की प्रस्तुति का सुझाव दिया। डॉ॰ मुण्डा ने कहा - एखन कर बेरा में आदिवासी मन के देश कर मुख्य धारा संगे जुड़के चाही , संगे-संगे आपन सांस्कृतिक विरासत के बचायक ले भी तेयारी करेक चाही। अब, आदिवासी मन के, हिन्दी आउर अंगरेजी विषय कर पढ़ाई संगे पुस्तैनी

बिरासत के बचाय ले मातृभाषा में पढ़ेक-लिखेक भी आवश्यउक होवी। ई पुस्तक में, राष्ट्रीय एकता रूपी गुलदस्ता में, आपन सांस्कृतिक धरोहर रूपी गुलैची आउर गेंदा फूल के चिन्हेक, चुनेक आउर जोगाएक कर काम, डॉ॰ नारायण उराँव शुरू कइरहँय। इकरले उनके आउर उनकर पूरा टीम के बहुत-बहुत बधाई। नया लिपि में ई लेखे गुन होवेक चाही -

क) नया लिपि, एक ध्वनि, एक संकेत कर अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान कर सिद्धांत लेखे होवे।

ख) आपन भाषा कर सउब ध्वनि कर प्रतिनिधित्व होवेक चाही।

ग) अक्षर सिखाएक कर तरीका आसान से कठिन दने जाएक लेखे होवेक चाही।

घ) नया लिपि , आदिवासी समाज और संस्कृति कर प्रतिनिधित्व करेक चाही। आदिवासी मने प्रकृति से सीख के आपन दैनिक जीवन में दायाँ से बायाँ अर्थात वर्तमान घड़ी कर विपरित दिशा में कर्मकांड करयना। ई बात मने भी लिपि चिन्ह में दिखेक चाही।

ङ) नया लिपि में, पढेक आउर लिखेक में समानता होवेक चाही।

च) तकनीकी विज्ञान कर अनुरूप चिनहाँ के राखल जाएक चाही।

छ) कम से कम चिनहाँ से अधिक से अधिक ध्वनि कर प्रतिनिधित्व होवे चाही।

ज) भाषा विज्ञान में कहल जाएला कि छउवा मने "प वर्गीय" शब्द से बोलेक शुरू करयना, से ले समाज और सभ्यता कर विकास कर भी बात सामने आवेक चाही।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर नई लिपि में सुधार किये जाने पर सबों की सहमति बनीं।

नई लिपि के वर्णमाला में संशोधन एक भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण

आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि लिपि का संशोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सम्पन्न हुई और संशोधित स्वरूप तैयार किया गया। बैठक में डॉ॰ रामदयाल मुण्डा एवं डॉ॰ फ्रांसिस एक्का के सुझाव के अनुसार , अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप आसान से कठिन की ओर के मानक के आधार पर वर्णमाला स्थापित किया गया, जिसे आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी में सर्व सहमति से स्वीकार कर लिया गया। बैठक सत्यभारती, राँची में हुई।

प्रभात खबर

23 जून 1997, सोमवार

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

संवाददाता

रांची, 22 जून : पुरुलिया रोड स्थित सत्य भारती सभागार में कल 'आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप' विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान जुलियस बा ने की. गोष्ठी का उद्देश्य रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखित 'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह में लिये गये निर्णयों का क्रियान्वयन करना था.

ज्ञातव्य है कि पिछली सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया था कि लिपि का संशोधित स्वरूप निम्न बातों के अनुरूप हो : एक ध्वनि- एक संकेत के सिद्धांत पर आधारित हो, वर्णमाला का निर्धारण सरलता से कठिनता की ओर हो, कम से कम चिन्हों से अधिक से अधिक ध्वनियों को लिखा जा सके, अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाये और आदिवासी भाषा संस्कृति को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया जाये. इसी परिप्रेक्ष्य में लिपि के संशोधित स्वरूप पर इस गोष्ठी में विचार-विमर्श किया गया. गोष्ठी में सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि (लिपि) वर्णमाला का नवीनतम संशोधित स्वरूप तैयार किया गया.

गोष्ठी में लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ नारायण उरांव, रांची विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एवं जनजातीय विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रामदयाल मुंडा, सेवानिवृत्त अवर स्वास्थ्य निदेशक डॉ विश्वनाथ भगत, [illegible] सेवा समिति के अध्यक्ष पीएनएस सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप, राजू उरांव, मीना टोप्पो, मंगरा उरांव, विवेकानंद भगत, प्रो नारायण भगत, प्रो राजेश कुजूर, प्रो रामकिशोर भगत, डॉ बुदु उरांव आदि ने अपने विचार रखे और कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. विशप डॉ निर्मल मिंज ने इस स्वरूप को अंतिम स्वरूप की संज्ञा दी. गोष्ठी में निर्णय लिया गया कि अब इस नवीनतम संशोधित लिपि से साहित्य सृजन किये जायें.

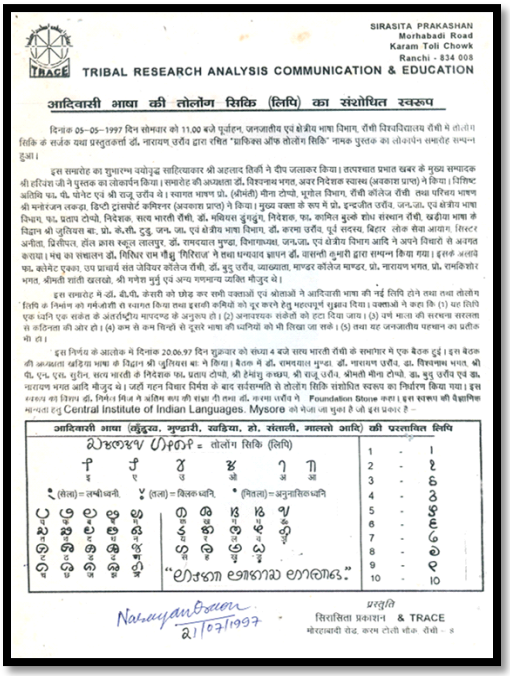

SIRASITA PRAKASHAN
Morhabadi Road
Karam Toli Chowk
Ranchi - 834 008

TRACE TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप

दिनांक 05–05–1997 दिन सोमवार को 11.00 बजे पूर्वाह्न, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची में तोलोंग सिकि के सर्जक यथा प्रस्तुतकर्त्ता डॉ. नारायण उराँव द्वारा रचित "ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि" नामक पुस्तक का लोकार्पन समारोह सम्पन्न हुआ।

इस समारोह का शुभारम्भ वयोवृद्ध साहित्याकार श्री अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर किया। तत्पश्चात प्रभात खबर के मुख्य सम्पादक श्री हरिवंश जी ने पुस्तक का लोकार्पन किया। समारोह की अध्यक्षता डॉ. विश्वनाथ भगत, अवर निदेशक स्वास्थ (अवकाश प्राप्त) ने किया। विशिष्ट अतिथि फा. पी. पोनेट एवं श्री राजू उराँव थे। स्वागत भाषण प्रो. (श्रीमंती) मीना टोप्पो, भूगोल विभाग, राँची कॉलेज राँची तथा परिचय भाषण श्री मनोरंजन लकड़ा, डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर (अवकाश प्राप्त) ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. इन्द्रजीत उराँव, जन.जा. एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, फा. प्रताप टोप्पो, निदेशक, सत्य भारती राँची, डॉ. मथियस डुंगडुंग, निदेशक, फा. कामिल बुल्के शोध संस्थान राँची, खड़ीया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा., प्रो. के.सी. टुडु, जन. जा. एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, डॉ. करमा उराँव, पूर्व सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग, सिस्टर अनीता, प्रिंसीपल, हॉल क्रास स्कूल लालपुर, डॉ. रामदयाल मुण्डा, विभागाध्यक्ष, जन.जा. एवं क्षेत्रीय विभाग आदि ने अपने विचारों से अवगत कराया। मंच का संचालन डॉ. गिरिधर राम गौंझु 'गिरिराज' ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वासन्ती कुमारी द्वारा सम्पन्न किया गया। इसके अलावे फा. क्लेमेंट एक्का, उप प्राचार्य संत जेवियर कॉलेज राँची, डॉ. बुदु उराँव, व्याख्याता, माण्डर कॉलेज माण्डर, प्रो. नारायण भगत, प्रो. रामकिशोर भगत, श्रीमती शांती खलखो, श्री गणेश मुर्मु एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजुद थे।

इस समारोह में डॉ. बी.पी. केसरी को छोड़ कर सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं ने आदिवासी भाषा की नई लिपि होने तथा तथा तोलोंग लिपि के निर्माण को गर्मजोशी से स्वागत किया तथा इसकी कमियों को दूर करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया। वक्ताओं ने कहा कि (1) यह लिपि एक ध्वनि एक संकेत के अंतर्राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुरूप हो। (2) अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाय। (3) वर्ण माला की सरचना सरलता से कठिनता की ओर हो। (4) कम से कम चिन्हों से दूसरे भाषा की ध्वनियों को भी लिखा जा सके। (5) तथा यह जनजातीय पहचान का प्रतीक भी हो।

इस निर्णय के आलोक में दिनांक 20.06.97 दिन शुक्रवार को संध्या 4 बजे सत्य भारती राँची के सभागार में एक बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा: ने किया। बैठक में डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. नारायण उराँव, डा. विश्वनाथ भगत, श्री पी. एन. एस. सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फा. प्रताप टोप्पो, श्री हेमांशु कच्छप, श्री राजू उराँव, श्रीमती मीना टोप्पो, डा. बुदु उराँव एवं डा. नारायण भगत आदि मौजुद थे। जहाँ गहन विचार विर्मश के बाद सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि संशोधित स्वरूप का निर्धारण किया गया। इस स्वरूप को विशप डॉ. निर्मल मिंज ने अंतिम रूप की संज्ञा दी तथा डॉ. करमा उराँव ने Foundation Stone कहा। इस स्वरूप की वैज्ञानिक मान्यता हेतु Central Institute of Indian Languages. Mysore को भेजा जा चुका है जो इस प्रकार है –

आदिवासी भाषा (कुँड़ुख, मुण्डारी, खड़िया, हो, संताली, मालतो आदि) की प्रस्तावित लिपि

= तोलोंग सिकि (लिपि)

इ ए उ ओ अ आ

(सेला) = लम्बी ध्वनी, (तला) = विलक ध्वनि, (मितला) = अनुनासिक ध्वनि

1 - 1
2 -
3 -
4 -
5 -
6 -
7 -
8 -
9 -
10 - 10

Narayan Oraon
21/07/1997

प्रस्तुति
सिरासिता प्रकाशन & TRACE
मोरहाबादी रोड, करम टोली चौक, राँची - 8

वर्ष - 1998

डॉ॰ फ्रांसिस एक्का एवं डॉ॰ रामदयाल मुण्डा द्वारा नई लिपि हेतु दिशा-निर्देष जारी:-
डॉ॰ फ्रांसिस एक्का , पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), डॉ॰ रामदयाल मुण्डा , पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), डॉ॰ निर्मल मिंज, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), फा. प्रताप टोप्पो (पत्रकारिता, यू.एस.ए.), डॉ॰ नारायण उराँव (एम.बी.बी.एस.), श्री मनोरंजन लकड़ा , डॉ॰ नारायण भगत , श्री विवेकानन्द भगत , श्री मंगरा उराँव आदि कई भाषाविदों एवं शिक्षाविदों की उपस्थिति में होटल महाराजा , राँची में दिनांक 22 एवं 24 जनवरी 1998 को तोलोंग सिकि के विकास के संबंध में दो दिन बैठक कर लिपि विकास संबंधी दिशा निर्देश निर्धारित हुआ। परिचर्चा के क्रम के बतलाया गया कि विश्व स्तर पर

लिपि की प्रस्तुति तीन तरह से की जाती हैं - 1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली लिपि 2. राजनीति आधारित लिपि 3. तकनीकि आधार वाली लिपि। दुनियाँ में सभी लिपियाँ , सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली लिपि है। विचार-विमर्श के अंत में निर्णय लिया गया कि - नई लिपि, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली हो तथा तकनीकि मापदण्डों पर खरा उतरे।

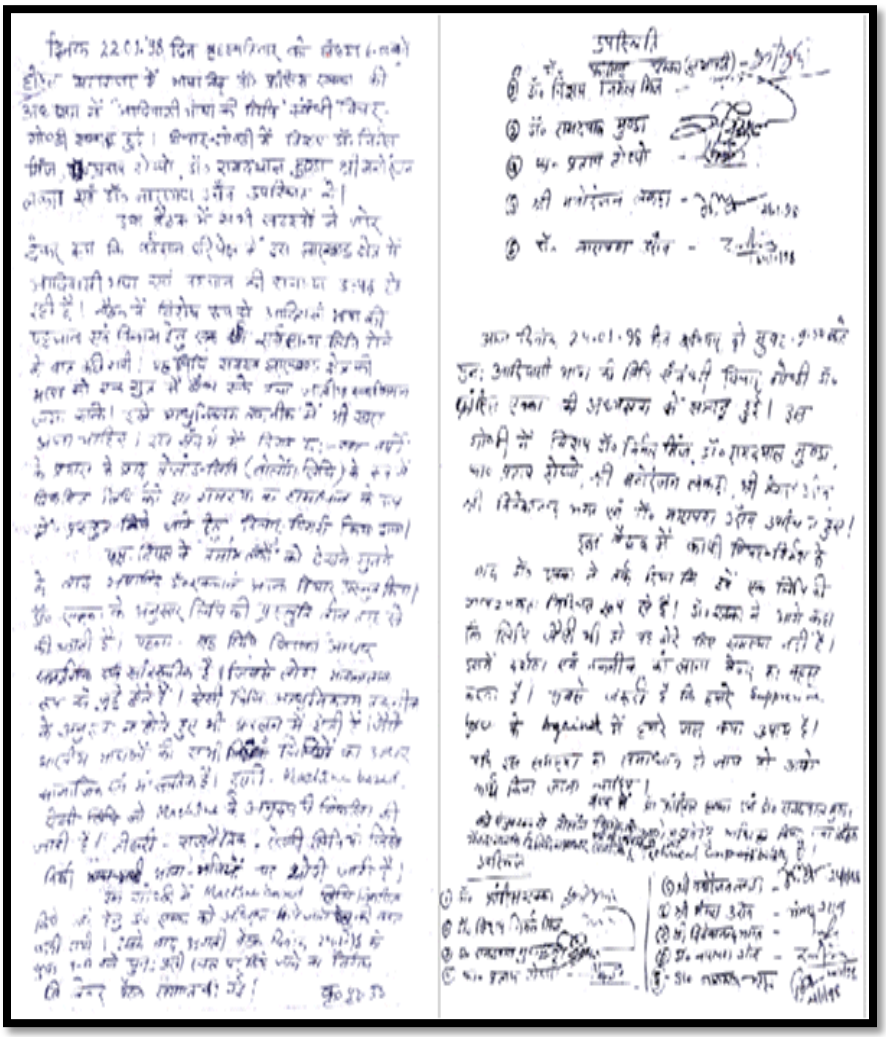

वर्ष - 1999

डॉ॰ रामदयाल मुण्डा , पूर्व कुलपति , राँची विश्वविद्यालय , राँची एवं डॉ॰ (श्रीमती) इन्दु धान, पूर्व कुलपति , मगध विश्वविद्यालय , बोधगया एवं सिदहु-कान्हु मुरमु वि॰ , दुमका द्वारा संवादाता सम्मेलन कर दिनांक 15 मई 1999 ई॰ को तोलोंग सिकि (लिपि) को जनमानस के प्रयोग के लिए जारी किया गया। संवादाता सम्मेलन में डॉ॰ रामदयाल मुण्डा , डॉ॰ (श्रीमती) इन्दु

धान, डॉ॰ नारायण भगत, डॉ॰ नारायण उराँव, प्रो॰ मीना टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री हिमांशु कच्छप, श्री मनोहर लकड़ा, श्री महेश भगत एवं श्री साधु उराँव उपस्थित थे

(5) राँची एक्सप्रेस, रविवार, 16 मई 1999

तोलोंग सिकि (लिपि) जनमानस के प्रयोग के लिए जारी

तोलोङ सिकि (लिपि)

(सेला) = लम्बी ध्वनि, । (तला) = विकारी अ

(मिलता) = अनुनासिक ध्वनि

?

वर्ष – 2016

(उपरोक्त वक्तव्य को तोलोंग सिकि से देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण)

डॉ॰ निर्मल मिंजस गही एँ:ड़ बक्कय

तोलोंग सिकि गा अक्कु परिदया, उसुगिया दरा अदि गही बेंज्जा-चुंज्जा मुँहुँ मंज्जा केरा। परदना उसुगना बी:री नू गा द:व-मलदव इथिर'ई दिम। ने चाह'ओ ने मल चाह'ओ – आ:द गा ओरोत-ओरोतर ही कत्था तली। मुन्दा ने:कन ख़ोंड़हा इन्जिर'ई अदिन मलता आ:रिन गा ओरमर गेम इन्जिरना मनी। अदिन बच'उर (पढ़'उर) दरा मल बच'उर (मल पढ़'उर) ओरमर गेम एँ:ड़ो ख़ेक्खा पल्ली इन्जिरना चाँ:ड़ मनी। इदिन ओरमर गे बुझुरना चाँ:ड़ रउई। ए:न गा ओ:रे तिम तोलोंग सिकिन इन्जिरकन दरा अदिन पोजोरनुम केरकन। एका से बेड़ा बरचा अन्नेलम ओरमर गे सोच-घो:खन बुझुरनुम सम्भव ड़ाच–नखरना गही चिहुँट नंज्जक इ:रकन मुन्दा ओन्टा केम चिद्दो बिहनी उरखी दिम का:ली, एन्देम सनोय ?

धड़न बओत धरमेन का आ:द नमा गे तोलोंग सिकिन डॉ॰ नारायण उराँवस गही ख़ेक्खा:ती उपचन नन्त:अर कुँड़ुख़ ख़ोंड़हा गे चिच्चाट।आ:लर ही डॉक्टनमनर की हूँ डॉ॰ नारायणस एन्नो कोंहा चिरखिन चेड्डस। धरमे आ:सिन आशिष चिआ दरा आ:स गही खोंड़हा नलख-ननना बउसा परदनुम का:लन नेक'आ। अक्कुसगा झारखण्डा सरकार तोलोंग सिकिन इंज्जिरा अरा लुरकुडिया नू ओ:रे नंज्जाकचिच्चा। अक्को लुरकुडिया अरा ख़ेख़ेल लुरकुडिया गूटि तोलोंग सिकि जोरजोर'अन बिलचो अरा परदो। ए:न एन्नेेम्मोलोंग सिकि गे द:व बा:ख़दन।

बरा ओरमर संग्गेख़ासंग्गेनलख ननर कुँड़ुख़ कत्थहनमेरख़ा गूटि मेच्छाबदर्दओत। बरा ओरमा सन्नीा कोंहा लूरगर, धड़नगर, कुँड़ख़र जोड़ोरओत तसले नलनुम, बी:चनुम, पा:ड़नुम नम्हछऱअयंग कत्थबनसेवा-सुसर ननोत। ख़ेख़ेल नू, मन्न-मास, टोड़ंग-परता, लव-लड़ङ अम्म:ता:का, गुट्ठी तीना ती डेब्बारकिन्दिरारई, अन्नौम कुँड़ख़र तम्ह,य उज्ज-नाओक्कगना गोहला-उड़ना, ने:ग-चार ननना गुट्ठी नू ती:ना ती डेब्बार किन्दोरारनुमनन्न र।अन्नूेम तोलोंग सिकि नू हूँ ती:ना ती डेब्बा किन्दीरारनुमपरिदकी रअई। इ:द कुँड़ुख़ ख़ोंड़हा गही अनथन द:व कत्था:लेली। बरा, नाम ओरमत संग्गेमनर कुँड़ुख़ कत्थाअरा ख़ोंड़हन पर्द'आ अरा सँवर'आ गे नलख ननोत।

डॉ॰ बिशप निर्मल मिंज अरा डॉ॰ नारायण उराँव 'सैन्दा'

नेड्डा – 19.06.2016, उल्लास- एतवार, अड्डा- डिबीडीह राँची।

\- - - - - -

वर्ष – 2017

कुँड़ुख़ कत्थानु नलख ननु गे बिशप डॉ॰ निर्मल मिंजस गे साहित्य अकादमी सम्माि2016 ख़क्खुरा। ई बेड़ा नु बबा निर्मल मिंजस गही साहित्यअकादमी, नई दिल्लीमुंधारे तंगआ कत्थख़अरा खोंड़हा मजही ता कत्थनख़ो:जर दरा फरीफटी ननर तिंग्गायस।आस गही तिंगका अरा कत्थाअक्क हुही पतख़ा नु चिपिरकी बि'ई। तंगअय बखनी नु लुरकुड़िया बेड़ा ती अकता बेड़ा गूटी ता घो:खन तिंग्ग्यस।

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान (कुँड़ुख़) से सम्मानित निर्मल मिंज का वक्तव्य

परम आदरणीय डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी, डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी!

मेरी मातृभाषा कुँड़ुख़ की छोटी सेवा के लिए इतना बड़ा भाषा सम्मान देकर, आपने मुझे और कुँड़ुख़ (उराँव) समाज को सम्मानित किया है, इसके लिए मैं आप लोंगों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा को आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त नहीं होते हुए भी, आपने इस भाषा के सेवक को सम्मान दिया है, इसके लिए कुँड़ुख़ समाज साहित्य अकादेमी के प्रति धन्यवाद अर्पित करता है।

आपको मालूम है कि कुँड़ुख़ भाषा, द्रविड़ भाषा परिवार की है, पर उत्तर भारत में इस भाषा की आबादी पायी जाती है। भारत में झारखण्ड, बिहार, असम, बंगाल, ओड़िसा, छत्तीसगढ़, अण्डामन द्वीप समूह और दिल्ली में यह समाज पाया जाता है। भारत में लगाग 40 लाख से अधिक कुँड़ुख़ समाज के लोग हैं और भारत से बाहर नेपाल के तराई क्षेत्र, बंगलादेश के पश्चिम दिनाजपुर जिले में कुँड़ुख़ भाषा बोली जाती है। इस भाषा का सीधा संबंध मालतो (राजमहल पहाडी) और किसान भाषा ओड़िसा से है। कुँड़ुख़ भाषा का संबंध बलूचिस्तान के ब्रहुई भाषा से है। कई कारणों से इस भाषा के व्यवहार और साहित्य निर्माण में कमी रही है। इससे संघर्ष करते हुए भाषा प्रेमियों ने इसे जीवित रखने और विकसित करने का प्रयास किया है। सबसे पहले विदेशी मिशनरियों ने कुँड़ुख़ भाषा को रोमन और देवनागरी लिपि में लिखित रूप दिया। इन लेखकों में मिशनरी फर्दिनेन्द हॉन का नाम लेना उचित है। उन्होंने अंग्रेजी में 'कुड़ुख़ ग्रामर' पुस्तक लगभग सन् 1911 में प्रकाशित की, जिसका अनुवाद कुड़ुख़ में हो चका है। इसके बाद डॉ. शान्ति प्रकाश बखला, डॉ. सी. एम. तिग्गा, श्री दवले कुजूर,, श्री बिहारी लकड़ा, श्री जूलियस तिग्गा, श्री अहलाद तिर्की ने कुड़ुख़ में लिखा है। वर्तमान में इस भाषा को उजागर करने के लिए डॉ. नारायण उराँव (मेडिकल डॉक्टर) ने तोलोड सिकि (लिपि) किया आविष्कार किया और वह व्यवहार में लाई जा रही है। परन्तु अधिक पुस्तकें देवनागरी लिपि में ही लिखी गईं हैं। इस सेवा को आगे बढ़ाने में **''कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया, दिल्ली''**, **'एःन कुँड़ुख़न'** पत्रिका के सम्पादक फादर अगापित तिर्की, पत्थलगाँव, छत्तीसगढ़ से प्रकाशित कर रहे हैं, तथा राँची विश्वविद्यालय, आदिवासी और क्षेत्रीय भाषा विभाग तथा कॉलेजों में साहित्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, पर वह काफी नहीं है।

कुँड़ुख़ भाषा में पढ़े लिखे सदस्यों की जड़ कट गई है। जिस दिन वे स्कूल गए, उसी दिन उसकी मातृभाषा की जड़ कटनी आरंभ हुई। वे हिन्दी और इंगलिश भाषा के माध्यम से पढ़ना–लिखना शुरू करके उच्च शिक्षा भी पा रहे हैं।

अतः मेरी प्रार्थना है कि राज्यों के कुँड़ुख़ क्षेत्रों /ग्रामीण स्कूलों में प्राईमरी स्कूल (1 से 5) की पढ़ाई कुँड़ुख़ भाषा के माध्यम से की जाए, इसके साथ–ही–साथ बच्चे हिन्दी और अंग्रजी भी सीखते जाएंगे और उचित तरह से वे राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय भाषा में आगे पढ़ाई करेंगे। तब कुँड़ुख़ भाषा की जड़ पक्की होगी और भविष्य में इस भाषा का साहित्य भी उभरेगा।

मैंने कुँड़ुख़ भाषा को जिंदा रखने का प्रयास 1943 ई. कक्षा 9 में रहते हुए आरंभ किया और अब भी करता जा रहा हूँ। राज्य का सहयोग कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास के लिए आवश्यक है, पर इसके लिए कुँड़ुख़ समाज की ही मुख्य रूप से जवाबदेही है।

मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में इस भाषा का विकास अधिक तेजी से होगा और इस भाषा की जड़ मजबूत होती जाएगी।

निर्मल मिंज
दिनांक : 21 फरवरी 1917

साभार : बक्कबहुही(त्रैमासिक कुड़ुख पत्रिका) , अददी अखडा प्रकाशन, अंक 4, 2017

वर्ष – 2018

(भाषा, संस्कृपत्रिसामाजिक धरोहर, प्रकृति विज्ञान एवं भाषा विज्ञान आधारित स्वथरूप

वर्ष – 2019

कुँड़ुख़ लिपि तोलोंग सिकि गही ख़ीःरी

"कुँड़ुख़ कत्था गही ख़ीःरी गा दिघम रअ़ई। बरा नाम गुनईन ननोत। कत्था कछनखरना अरा अदिन एःरा गे सीःबा ख़ाःरना गही कत्था गा ननना मनो। इय्या कुँड़ुख़ कत्था अरा लिपि पइत्त नु अख़ना गही बखनी नंज्ज एःरोत। कछनखरना अरा ख़ेबदा ती मेनना मुनता ख़ीःरी तली, मुन्दा कत्थन मेनर की अदिन ख़न्न ती एःरना बेसे चिन्हाँ चिअ़ना एँड़ता चम्मबी तली। अदा - आद अंगरेजी, अदा - आद हिन्दी ! अन्नेम एःरर किम तेंग्गोर चिओर का इःद का आद एन्नेद का अन्नेद बओर। अबंगेम कुँड़ुख़ लिपि गही ख़ीःरी तेंग्गना अरा अदिन टूड़ना–बचना ही चाँड़ मनो।

एकअम लिपि नु 'तोःड़' उरमिन ती सन्नी दरा ओःरे चटख़ना तली। कुँड़ुख़ नु सरह तोःड़ 6 गोटंग ₽ V ४ ४ ٦ ॥ / इ ए उ ओ अ आ मनी अरा हरह तोःड़ गा 35 गोटंग मनी, अदिन इसन तेंग्गना चाँड़ मल्ला। पहें हरह तोःड़ 'प' ती ओःरे मनी। आद एन्ने ∪ ७ ७ ७ ७ बेसे इथिर'ई अरा इबड़द प् फ् ब् भ् म् ब'अर फुरूचतार'ई। इदिन गा कुँड़ुख़र अरा आदिवासी लूरगरियर घोःड़चर दरा एःदर चिच्चर का कुँड़ुख़ हहस तोःड़ इचन्दम मनो। अबड़न जोड़–नाड़ ननर किम सिखिरना मनो। फिन दिगहा, सन्नी फरक–फरक ननअम मनी। अदिन तेंग्गा गे चिनहाँ मनी। तोलोंग सिकि ही ₽ अरा हिन्दी गही इ हहसन दिगहा कमआ गे हिन्दी नु ि टूड़ना मनी, मुन्दा कुँड़ुख़ नु ः चिआ ख़ने आद दिगहा मनी काःली। अन्नेम कुँड़ुख़ नु 'स' ओण्टे एका मनी। श अरा ष मल मनी। हिन्दी ही क्ष, त्र, ज्ञ, श्र हुँ मल मनी। 'ख़' 'ञ' अरा ञ़ तोड़ हिन्दी ती बिलग बि'ई।

इदा ! एरा तो एःन गा तोलोङ सिकि नुम नमुद चिआ–चिआ तेंग्गा बेद्दा लगदन। अक्कु एःन, तोलोङ सिकि एका से कुँड़ुख़ कत्था ही बखड़े नु बरचा दरा कोरचा अदिन अक्कु तेंग्गोन–मेन्ताओन। एःन गा जोंःख़ परिया तिम कुँड़ुख़ लिपि पइत्त नु बेद्दा गे ओःरे नंज्जकन। ओःरे नु ओन्टा सामुएल रंका नाःमे ही मास्टरस सन्त पॉल लूरकुड़िया नु बचतआ लगियस। आ रंका मास्टरस कुँड़ुख़ लिपि ओत्थरस। आस – 'न' गे नेर्र बेसे चिनहाँ कमनुम केरस। मुन्दा टूड़ा गे उजगोम पोल्ला काःला। जोक्क गेच्छा काःलर आद मुंज्जरा केरा। इदि ख़ोःखा ओरोत डॉ. अनन्ती जेबा सिंह नाःमे ही तमिल मुक्का 'ब्राहमी लिपि' ती 'बराती लिपि' ओत्थरा। अदिन जोक्क कुँड़ुख़र इंजिरअर "बाईबलन" कुँड़ुख़ नु तरजुमा ननर आ ब्राहमी लिपि ती चिपताःचर। आद हिन्दी ती नन्ना मल एत्थरा। ई ब्राहमी लिपि हुँ बग्गे उल्ला ठठआ पोल्ला। मुन्घ नु फर्दिनेन्द हॉनस गने मिसनरी सहेबर रोमन लिपि ती ढेर बग्गे पुथि टूड़चर। नाम हुँ अदिन इंजिरअर टूड़ा–बचआ ओःरे नंज्जकत, मुन्दा आद हुँ बग्गे उल्ला संग्गे चिआ पोल्ला। रोमन लिपि ख़ोःख़ा कुँड़ुख़र देवनागरी लिपिन इंजिरअर दरा टूड़ा–बचआ ओरे नंज्जर अरा अक्कुन गूटी मोघोरका रअ़नर। मुन्दा इत्ती एन्देर मलदव मना लगी अदिन गा आर मलम घोखआ लगनर। कुँड़ुख़ कत्था हिन्दी गही पतड़ा, टोड़ंग, परता नु एबेसेरआ काःला लगी। इत्ती कुँड़ुख़ कत्था नूख़ूरआ–नूख़ूरआ उज्जा लगी। दहदर कुँड़ुख़ मलम एथेरआ लगी। इदिन जोक्क कुँड़ुख़र ईःरयर, बुज्झरर, घोखचर। ई मजही नुम घरमे सवंग डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' सिन चाःजर मुन्दहाःरे ओन्दरा। आस कुँड़ुख़ नेग चाःलो ही मूःलीन घरअर की डण्डा कट्टना (भेलवाफड़ी) नेगचार ती गुनआ ओःरे नंज्जस। दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) नु डॉक्टरी ही पढ़ाई ननु सिन घरमे, आस गही मेद्दोन तिखड़ाःचा दरा तोलोङ सिकि ही छपन, कुँड़ुख़ लिपि रूःपे नु दहदर ननताःचा। आस गने जोक्क कुँड़ुख़र संग्गे चिअर नलख नना हेल्लरर। डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, इरबारिम मख़ा विज्ञान गही पंडितर सन्नी कमिटि गने होटल महाराजा, कचहरी चौक, राँची नु ओक्कर तोलोङ सिकिन फँड़ियाःचर दरा ओरमर छमहें एःदर चिच्चर का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था अरा उरमी आदिवासी मख़ा गे दःव मनो। कुँड़ुख़ गे गा तोलोङ सिकि अक्कु नमजद्दी मंज्जा केरा। झारखण्ड अरा पश्चिम बंगाल सरकार इदिन इंज्जरा दरा असम, छतीसगढ़, ओड़िसा, नेपाल, भूटान तरा हुँ ईद परदा लगी अरा असन टूड़ा–बचआ लगनर।

डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दस' गने जोक्क कुड़ख़र संग्गे मनर "बक्कहुही" नाःमे ही ओण्टा मून्दचन्दोख़ (त्रैमासिक) कुँड़ुख़ पतख़ा (पत्रिका) ओथोरआ लगनर। आद झारखण्ड, प. बंगाल, असम, ओड़िसा, छतीसगढ़, यू.पी. अरा नन्ना राःजी तरा बीःड़िरआ लगी। कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी, दिल्ली हुँ अक्कु इंज्जरा, पहें तोलोङ सिकि ती बग्गे नलख अरगी मना। अक्कु गा बअना मनो का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था गही सिकि तली।

डॉ0 निर्मल मिंज 'झरिया'

संस्थापक प्राचार्य, गॉस्सनर कालेज, राँची
लेखक, साहित्यकार, आदिवासी चिंतक एवं
साहित्य अकादमी भाषा सम्मान 2016 से सम्मानित।

दिनांक : 09 अगस्त 2019

(साभार : कुँड़ुख़ कत्थी तोलोंग सिकि गही इतिङख़ीरी)

(उपरोक्ता वक्तकव्य को तोलोंग सिकि से देवनागरी लिपि में लिप्यनन्तरण)

कुँड़ुख़ लिपि तोलोंग सिकि गही ख़ीःरी

" कुँड़ुख़ कत्था गही ख़ीःरी गा दिघम रअ़ई। बरा नाम गुनईन ननोत। कत्था कछनखरना अरा अदिन एःरा गे सीःबा ख़ाःरना गही कत्था गा ननना मनो। इय्या कुँड़ुख़ कत्था अरा लिपि पइत्त नु अख़ना गही बखनी नंज्ज एःरोत। कछनखरना अरा ख़ेबदा ती मेनना मुनता ख़ीःरी तली, मुन्दा कत्थन मेनर की अदिन ख़न्न ती एःरना बेसे चिन्हाँ चिअ़ना एँड़ता चम्मबी तली। अदा.आद अंगरेजी, अदा. आद हिन्दी ! अन्नेम एःरर किम तेंग्गोर चिओर का इःद का आद एन्नेद का अन्नेद बओर। अवंगेम कुँड़ुख़ लिपि गही ख़ीःरी तेंग्गना अरा अदिन टूड़ना.बचना ही चाँड़ मनो।

एकअम लिपि नु 'तोःड़' उरमिन ती सन्नी दरा ओःरे चटख़ना तली। कुँड़ुख़ नु सरह तोःड़ 6 गोटंग ₽ ৭ ℨ ४ ٦ ॥ / इ ए उ ओ अ आ मनी अरा हरह तोःड़ गा 35 गोटंग मनी, अदिन इसन तेंग्गना चाँड़ मल्ला। पहें हरह तोःड़ 'प' ती ओःरे मनी। आद एन्ने ᑌ ७ ല ൗ ω बेसे इथिर'ई अरा इबड़द प् फ् ब् भ् म् बअ़र फुरूचतार'ई। इदिन गा कुँड़ुख़र अरा आदिवासी लूरगरियर घोःख़चर दरा एःदर चिच्चर का कुँड़ुख़ हहस तोःड़ इवन्दम मनो। अबड़न जोड़.नाड़ ननर किम सिखिरना मनो। फिन दिगहा, सन्नी फरक.फरक ननअम मनी। अदिन तेंग्गा गे चिनहाँ मनी। तोलोंग सिकि ही ₽ अरा हिन्दी गही इ हहसन दिगहा कमआ गे हिन्दी नु ी टूड़ना मनी, मुन्दा कुँड़ुख़ नु : चिआ ख़ने आद दिगहा मनी काःली। अन्नेम कुँड़ुख़ नु 'स' ओण्टे एका मनी। श् अरा ष् मल मनी। हिन्दी ही क्ष, त्र, ज्ञ, श्र हुँ मल मनी। 'ख़' 'ज़' अरा अ़ तोड़ हिन्दी ती बिलग बि'ई।

इदा ! एरा तो एःन गा तोलोङ सिकि नुम नमुद चिआ.चिआ तेंग्गा बेद्दा लगदन। अक्कु एःन, तोलोङ सिकि एका से कुँड़ुख़ कत्था ही बखड़े नु बरचा दरा कोरचा अदिन अक्कु तेंग्गोन, मेन्तओन। एःन गा जों:ख़ परिया तिम कुँड़ुख़ लिपि पइत्त नु बेद्दा गे ओःरे नंज्जकन। ओःरे नु ओन्टा सामुएल रंका नाःमे ही मास्टरस सन्त पॉल लूरकुड़िया नु बचतआ लगियस। आ रंका मास्टरस कुँड़ुख़ लिपि ओत्थरस। आस 'न' गे नेर्रे बेसे चिनहाँ कमनुम केरस। मुन्दा टूड़ा गे उजगोम पोल्ला काःला।

जोक्क गेच्छा काःलर आद मुंज्जरा केरा। इदि ख़ोःखा ओरोत डॉ॰ अनन्ती जेबा सिंह नाःमे ही तमिल मुक्का ‘ब्राहमी लिपि' ती 'बराती लिपि' ओत्थरा। अदिन जोक्क कुँड़ुख़र इंजिरअर 'बाईबलन' कुँड़ुख़ नु तरजुमा ननर आ ब्राहमी लिपि ती चिपताःचर। आद हिन्दी ती नन्ना मल एत्थरा। ई ब्राहमी लिपि हुँ बग्गे उल्ला ठठआ पोल्ला। मुन्ध नु फर्दिनेन्द हॉनस गने मिसनरी सहेबर रोमन लिपि ती ढेर बग्गे पुथि टूड़यर। नाम हुँ अदिन इंजिरअर टूड़ा॰बचआ ओःरे नंज्जकत, मुन्दा आद हुँ बग्गे उल्ला संग्गे चिआ पोल्ला। रोमन लिपि ख़ोःख़ा कुँड़ुख़र देवनागरी लिपिन इंजिरअर दरा टूड़ा॰बचआ ओरे नंज्जर अरा अक्कुन गूटी मोघोरका रञनर। मुन्दा इत्ती एन्देर मलदव मना लगी अदिन गा आर मलम घोखआ लगनर। कुँड़ुख़ कत्था हिन्दी गही पतड़ा, टोड़ंग, परता नु एबेसेरआ काःला लगी। इत्ती कुँड़ुख़ कत्था नूखूरआ॰नूखूरआ उज्जा लगी। दहदर कुँड़ुख़ मलम एथेरआ लगी। इदिन जोक्क कुँड़ुख़र ईःरयर, बुज्झरर, घोखचर। ई मजही नुम धरमे सवंग डॉण नारायण उराँव 'सैन्दा' सिन चाःजर मुन्दहाःरे ओन्दरा। आस कुँड़ुख़ नेग चाःलो ही मूःलीन धरअर की डण्डा कट्टना ;भेलवाफड़ीद्ध नेगचार ती गुनआ ओःरे नंज्जस। दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय, बिहार, नु डॉक्टरी ही पढ़ाई ननु सिन धरमे, आस गही मेद्दोन तिखड़ाःचा दरा तोलोङ सिकि ही छपन, कुँड़ुख़ लिपि रूःपे नु दहदर ननताःचा। आस गने जोक्क कुँड़ुख़र संग्गे चिअर नलख ननाहेल्लरर। डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, इरबारिम भखा विज्ञान गही पंडितर सन्नी कमिटि गने होटल महाराजा, कचहरी चौक, राँची नु ओक्कर तोलोङ सिकिन फँड़ियाःचर दरा ओरमर छमहें एःदर चिच्चर का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था अरा उरमी आदिवासी भखा गे दःव मनो। कुँड़ुख़ गे गा तोलोङ सिकि अक्कु नमजद्दी मंज्जा केरा। झारखण्ड अरा पश्चिम बंगाल सरकार इदिन इंज्जरा दरा असम, छतीसगढ़, ओड़िसा, नेपाल, भूटान तरा हुँ ईद परदा लगी अरा असन टूड़ा॰बचआ लगनर।

डॉ0 नारायण उराँव ‘सैन्दस’ गने जोक्क कुँड़ख़र संग्गे मनर ‘बक्कहुही’ नाःमे ही ओण्टा मून्दचन्दोख़, त्रैमासिक, कुँड़ुख़ पतख़ा, पत्रिका, ओथोरआ लगनर। आद झारखण्ड, प॰ बंगाल, असम, ओड़िसा, छतीसगढ़, यू॰पी॰ अरा नन्ना राःजी तरा बींःड़िरआ लगी। कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी, दिल्ली हुँ अक्कु इंज्जरा, पहें तोलोङ सिकि

ती बग्गे नलख अरगी मना। अक्कु गा बअना मनो का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था गही सिकि तली।

डॉ0 निर्मल मिंज 'झरिया'
संस्थापक प्राचार्य, गॉस्सनर कालेज, राँची
लेखक, साहित्यकार, आदिवासी चिंतक एवं साहित्य
अकादमी भाषा सम्मान 2016 से सम्मानित।
दिनांक: 09 अगस्त 2019

प्रस्तोकता

भुनेश्वर उराँव,
सहायक शिक्षक, जतरा टाना भगत विद्या मंदिर, बिशुनपुर, घाघरा, गुमला।
बी॰कॉम॰(आनर्स),एम.ए.आर.डी., एम.ए.(कुँड़ुख़), NET(2020),Trainer(TolongSiki),
Mob.-9931202070 ,E-mail: bhunesh.oraon@gmail.com